

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-३१

दिनांक- मंगलवार, २५ अप्रैल, २०२३



विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 32.6 एवं 19.1 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 74 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 45 प्रतिशत, हवा की औसत गति 5.6 कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 4.6 मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 7.1 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 24.6 एवं दोपहर में 37.3 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में 2.8 मि०मी० वर्षा हुई है।

**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(26 से 30 अप्रैल, 2023)**

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 26 से 30 अप्रैल, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल आ सकते हैं। अगले 24 घंटों तक उत्तर बिहार के कुछ स्थानों पर बूँदा-बूँदी की सम्भावना बनी रहेगी। उसके बाद (27 अप्रैल से) मौसम शुष्क रहने की सम्भावना है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 35-38 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 20-24 डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 50 से 55 प्रतिशत तथा दोपहर में 20 से 30 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 8 से 14 कि०मी० प्रति घंटा की रफतार से पछिया हवा चलने की सम्भावना है। बेगूसराई, समस्तीपुर, सारण, गोपालगंज, पूर्वी तथा पश्चिमी चम्पारण जिलों में 26 तथा 28 अप्रैल को पुरवा हवा चलने का अनुमान है।

समसामयिक सुझाव

- पूर्वानुमानित अवधि में अगले 24 घंटों तक बूँदा बूँदी की सम्भावना है अतः किसान भाई बूँदा बूँदी की सम्भावना को देखते हुए तैयार फसलों की कटाई मंडाई सावधानी पूर्वक करें।
- रबी फसल की कटाई के बाद खाली खेतों की गहरी जुताई कर खेत को खुला छोड़ दें ताकि सूर्य की तेज धूप मिट्टी में छिपे किड़ों के अण्डे, प्युपा एवं घास के बीजों को नष्ट कर दें।
- मूंग व उरद की फसलों में सघन रोमोवाली सुंडिया की निगरानी करें। इनके सुंडियों के शरीर के उपर काफी घने बाल पाये जाते हैं। यह मूंग एवं उरद के पौधों के कोमल भागों विशेषकर पत्तियों को खाती है। इनकी संख्या अधिक रहने पर कभी-कभी केवल डण्डल ही शेष रह जाती है। इस प्रकार इस कीट से फसल को काफी नुकसान एवं उपज में काफी कमी आती है। रोक-थाम हेतु फसल में मिथाइल पैराथियान 50 ई०सी० दवा का 2 मि०ली०/लीटर या क्लोरपाईरिफॉस 20 ई०सी० दवा का 2.5 मि०ली०/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल में छिड़काव आसमान साफ रहने पर करें।
- लीची के पेड़ में फल बेधक कीट के शिशु जो उजले रंग के होते हैं। यह फलों के डंडल के पास से फलों में प्रवेश कर गुदे को खाते हैं जिससे प्रभावित फल खाने लायक नहीं रहता। इस कीट से वचाव हेतु लीची के पत्तियों एवं टहनियों पर प्रोफेनोफॉस 50 ई०सी० का 10 मि०ली० या कार्बारिल 50 प्रतिशत घुलनशील पॉवडर के 20 ग्राम दवा को 10 लीटर पानी में घोलकर अप्रैल माह में 15 दिनों के अन्तराल पर प्रति पेड़ की दर से दो छिड़काव आसमान साफ रहने पर ही करें।
- आम के पेड़ में मिलीबग (दहिया कीट) की निगरानी करें। यह कीट चिपटे गोल आकार के पंखहीन तथा शरीर पर सफेद दही के रंग का पॉउडर चिपका रहता है। यह आम के पेड़ में मुलायम डालों और मंजर वाले भाग में बहुतो की संख्या में चिपका हुआ देखा जा सकता है तथा यह उन हिस्सों से लगातार रस चुसता रहता है जिससे अक्रान्त भाग सुख जाता है तथा मंजर झड़ जाते हैं। इस कीट से रोकथाम हेतु डाइमथोएट 30 ई०सी०दवा का 1.0 मि०ली०/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर पेड़ पर समान रूप से आसमान साफ रहने पर छिड़काव करें।
- हल्दी एवं अदरक की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। खेत की जुताई में प्रति हेक्टेयर 25 से 30 टन गोबर की सड़ी खाद डालें। मई माह से किसान भाई हल्दी एवं अदरक की बुआई कर सकते हैं।
- फल मक्खी लतार वाली सब्जियों जैसे नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा फसल को क्षति पहुंचाने वाला प्रमुख कीट है। यह घरेलू मक्खी की तरह दिखाई देने वाली भूरे रंग की होती है। मादा कीट मुलायम फलों की त्वचा के अन्दर अंडे देती है। अंडे से पिल्लू निकलकर अन्दर ही अन्दर फलों के भीतरी भाग को खाता है। जिसके कारण पूरा फल सड़ कर नष्ट हो जाता है। इस कीट का प्रकोप शुरू होते ही 1 किलोग्राम छोआ, 2 लीटर मैलाथियान 50 ई०सी० को 1000 लीटर पानी में घोल कर 15 दिनों के अन्तराल पर दो बार छिड़काव आसमान साफ रहने पर ही करें।
- भिण्डी की फसल को लीफ हॉपर कीट द्वारा काफी नुकसान होता है। यह कीट दिखने में सुक्ष्म होता है। लीफ हॉपर भिण्डी के नवजात एवं व्यस्क दोनों पत्तियों पर चिपककर रस चुसते हैं। अधिकता की अवस्था में पत्तियों पर छोटे-छोटे घबड़े उभर जाते हैं और पत्तियाँ पीली तथा पौधे कमजोर हो जाते हैं जिससे फलन प्रभावित होता है। इस कीट का प्रकोप दिखाई देने पर इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। भिण्डी फसल में माइट कीट की निगरानी करते रहे। प्रकोप दिखाई देने पर ईथियाँ/1.5 से 2 मि०ली० प्रति ली० पानी की दर से छिड़काव आसमान साफ रहने पर ही करें। गरमा सब्जियों जैसे भिन्डी, नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा की फसल में निकाई-गुड़ाई करें।
- खरपतवार रोग एवं कीट नियंत्रण हेतु पड़ती खेत की ग्रीष्मकालीन जुताई करें। कीट नियंत्रण हेतु बसंतकालीन ईख तथा गरमा फसलों पर कीटनाशक एवं फफूंदनाशक दवाओं का व्यवहार करें। हरा चारा के लिए मक्का, ज्वार, बाजरा तथा लोबिया की बुआई करें।

आज का अधिकतम तापमान: 33.7 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.4 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमान: 20.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 2.1 डिग्री सेल्सियस कम
---	--

(डॉ० गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ० ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)